'त्यागपत्र' उपन्यास में जैनेन्द्र कुमार का उद्देश्य

पद्म भूषण प्रताप सिंह
शोधछात्र, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

हिन्दी साहित्य की उपन्यास लेखन परम्परा में जैनेन्द्र कुमार को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। जैनेन्द्र कुमार ने प्रेमचन्दयुगीन लेखक होने के बावजूद प्रेमचन्द का अनुकरण नहीं किया। अपितु इससे हटकर इन्होंने एक नए मार्ग का सृजन किया। जैनेन्द्र कुमार का स्थान और भी महत्वपूर्ण इसलिए हो जाता है क्योंकि इन्होंने समूची परम्परा में लीक से हटकर अपने उपन्यासों को मनोवैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। इसी विशिष्टता के फलस्वरूप जैनेन्द्र को हिन्दी का प्रथम मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार भी माना जाता है।

जैनेन्द्र के मंतव्य को स्पष्ट करने से पूर्व हमें जैनेन्द्र की उपन्यास कला के कुछ अन्य पहलुओं का भी उल्लेख करना नितान्त आवश्यक प्रतीत होता है। वास्तव में जैनेन्द्र के सम्बन्ध में यह कहा जाए कि इन्होंने प्रेमचन्द युग की उपन्यास कला को एक नया मोड़ प्रदान किया तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मुख्यतः इन्होंने अपनी उपन्यास कला के माध्यम से जीवन एवं मनुष्य के प्रति चिन्तन का दृष्टिकोण अपनाया है।

त्यागपत्र उपन्यास जैनेन्द्र कुमार द्वारा सन् 1938 ई0 में एक कालजयी रचना के तौर पर उभरकर प्रस्तुत हुआ। यद्यपि इस उपन्यास की संक्षिप्तता सर्वविदित है और शायद ही हिन्दी उपन्यास परम्परा में इससे इतर कोई अन्य लघु एंव संक्षिप्त उपन्यास प्राप्त हो। इसके बावजूद भी यह इतना सटीक एवं महत्वपूर्ण है कि इसके माध्यम से हम समाज एवं उससे जुड़े हुई कई अन्य पहलुओं पर हम बहुत ही व्यापक ढंग से चिंतन करते हैं।

त्यागपत्र आत्मकथात्मक शैली में लिखा हुआ बहुत ही मार्मिक एवं संवेदनशील उपन्यास है। निश्चय ही संक्षिप्तता होने के बावजूद जैनेन्द्र के कौशल को हम बहुत हद तक इस उपन्यास के जरिये प्राप्त करते हैं। हिन्दी साहित्य की यह उन उत्कृष्ट रचनाओं में से है जो पाठकों के अन्तर्मन को प्रभावित करती है।

उपन्यास के आरम्भ से ही प्रमोद की डायरी के आधार पर जैनेन्द्र ने प्रमोद के अन्तर्मन में चल रही हलचल एवं ग्लानि के भाव को बहुत ही यथार्थवादी एवं सार्थक ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रमोद इस उपन्यास का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पात्र है और वह अतीत की पीड़ाजनक स्मृतियों के फलस्वरूप अपार आत्मग्लानि का अनुभव करता है और जज जैसे महत्वपूर्ण पद से त्यागपत्र दे देता है। संक्षेप में कहा जाए तो यही इस उपन्यास के शीर्षक का आधार है। वास्तव में प्रमोद के वक्तव्य से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि वह कितना अपराधबोध से ग्रसित है। प्रमोद ने समाज में व्याप्त तमाम प्रकार की मान्यताओं और प्रतिष्ठाओं के वजूद को कायम रखा और इन्हीं तत्वों को कायम रखने के फलस्वरूप जब उसे अपराध बोध होता है तो वह समाज की उन प्रतिष्ठाओं और सारी मान्यताओं को त्यागपत्र दे देता है।

निश्चय ही इस उपन्यास के शीर्षक के पार्श्व में यही मूल तत्व निहित है। वास्तव में प्रमोद समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति है किन्तु उसे उस प्रतिष्ठा में भी दाग का आभास महसूस होता है। यहाँ यह भी स्वीकार किया जा सकता है कि मृणाल या अपनी बुआ के साथ हुए सामाजिक–शोषण के लिए प्रमोद स्वयं को उत्तरदायी मानता है और उसका त्यागपत्र मृणाल के साथ हुए अत्याचारों के प्रायश्चित के तौर पर है। प्रमोद के अन्तर्मन में इतनी आत्मग्लानि है कि उसे जज जैसे प्रतिष्ठित एवं महत्वपूर्ण पद पर रहना भी जायज नहीं प्रतीत होता है जिसके फलस्वरूप वह अपने पद से त्यागपत्र दे देता है। निर्विवाद रूप से उपर्युक्त तत्व ही जैनेन्द्र के प्रमुख उपन्यास के शीर्ष के पार्श्व में निहित है। इस सम्बन्ध में प्रमोद के कथन का संक्षिप्त अंश प्रस्तुत है ''मैंने अपने चारों ओर तरह–तरह की बाड़ खड़ी करके खूब मजबूत जमा ली है। कोई अपवाद उसको पार कर मुझ तक नहीं आ सकता, पर उन बुआ की याद जैसे मेरे सब कुछ को खट्टा बना देती है। क्या वह याद मुझे अब चैन लेने देगी?'' इस प्रकार के वक्तव्य से प्रमोद के अपराधबोध का भाव स्पष्ट होता है। उसके अन्तर्मन में रह रहकर यही भाव आता रहता है कि उसने अपनी बुआ के प्रति निष्क्रिय सहानुभूति एवं मूल करुणा के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। वास्तव में सब कुछ हो जाने के पश्चात् प्रमोद का हृदय ही न्यायालय सरीखा प्रतीत होता है।

इस प्रकार हमें जैनेन्द्र की उत्कृष्ट लेखनी के माध्यम से प्रमोद के हृदय में चल रही आन्तरिक उठापठक सहज ही दृष्टव्य होती है। जब हम त्यागपत्र का उल्लेख करते हैं तो उपन्यास

के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पात्र मृणाल यानि बुआ की मनोदशा का मार्मिक वर्णन करना भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यद्यपि कि समूचे उपन्यास में प्रमोद के माध्यम से मृणाल के जीवन का मूल्यांकन हुआ है किन्तु मृणाल किस प्रकार तमाम संवेदनाओं के साथ संघर्ष करती है यही दर्शाना जैनेन्द्र का प्रमुख मंतव्य स्पष्ट होता है।

वास्तव में बुआ का चरित्र ही पूरे उपन्यास में व्यापक ढंग से प्रदर्शित होता है। साथ ही साथ हिन्दी साहित्य की उपन्यास परम्परा में बुआ का चरित्र एक प्रकार से प्रतिमान स्थापित करता प्रतीत होता है। मुख्यतः जैनेन्द्र ने बुआ के जरिये यह दर्शाने का बहुत ही सार्थक ढंग से प्रयत्न किया है कि समाज में किस प्रकार अमानवीयता व्याप्त हैं यह समाज कितना अमानवीय है और इसके माध्यम से किस प्रकार से एक खुशहाल युवती की जिन्दगी नर्क सरीखी हो जाती है, इसे दर्शाने में जैनेन्द्र पूर्ण रूप से सफल होते हुए प्रतीत होते हैं। जैनेन्द्र ने उपन्यास के आरम्भ में यह दर्शाया है कि मृणाल का जीवन बहुत ही उल्लास के साथ व्यतीत होता है। समय के साथ उसमें परिवर्तन भी प्रतीत होते हैं किन्तु वह सभी के साथ वह तब तक प्रसन्नता महसूस करती है। वह अपने भतीजे के साथ सभी खट्टे–मीठे अनुभवों को साझाव करती है।

बुआ का प्रारम्भिक जीवन बहुत ही उल्लास से परिपूर्ण है। इसका सहज अन्दाजा बुआ के इस वक्तव्य से लगाया जा सकता है। ''चिड़ियां कितनी ऊँची उड़ जाती है। मैं चिड़ियां होना चाहती हूँ। उसके छोटे–छोटे पंख होते हैं। पंख खोल वह आसमान में जिधर चाहे उड़ जाती है। कैसी मौज है। मैं चिड़िया बनना चाहती हूँ।'' इस संक्षिप्त से वाक्य से जाहिर है कि बुआ के अर्न्तमन में किस प्रकार से स्वतंत्रता की चाहत है। जैनेन्द्र के इस उपन्यास के सम्बन्ध में मैं व्यक्तिगत रूप से कहना चाहूँगा कि क्यों हमें यह हिन्दी के सर्वाधिक मार्मिक उपन्यासों में से एक प्रतीत होता है? वास्तव में जब हम उपन्यास का शुरू में अध्ययन करते हैं तो हम बुआ के जीवन के सकारात्मक लम्हों से रुबरु होते हैं किन्तु जब समय के साथ–साथ बुआ के जीवन पर समाज की बंदिशों एवं मान्यताओं का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता प्रतीत होता है तो बुआ का शेष जीवन अभिशाप के समान हो जाता है। समाज के द्वारा बुआ पर हुआ शोषण चाहे वह जिस प्रकार रहा हो, उपन्यास की मार्मिकता का प्रमुख कारक है। निर्विवाद रूप से जैनेन्द्र का यह उपन्यास स्त्री

प्रश्न पर लिखा गया है एवं यह स्त्री की सामाजिक स्थिति को बहुत ही संवेदनशीलता के साथ देखने वाला उपन्यास है।

वास्तव में बुआ द्वारा किया गया प्रेम इतना निषिद्ध नहीं प्रतीत होता है कि उसके आधार पर उसे जीवनभर प्रताड़ना मिलती रहे। बुआ ने सदैव यह स्वीकार किया कि उसने प्रेम किया है और उसी के फलस्वरूप उसे सारे जीवन भर सजा मिलती रही। इसके बावजूद वह सत्य को नहीं छोड़ती है। वह प्रेम को सदैव मानती है। इसके साथ ही उसके मन में कहीं भी इस प्रकार का भाव नहीं है कि वह सत्यता को छुपाकर समाज की नज़रों में अपनी अच्छी छवि स्थापित करे। बुआ के व्यक्तित्व में किसी प्रकार का छिपाव नहीं है और न ही उसे बहुत लोकलाज की परवाह है। वह अपने पति के सम्मुख भी यह स्वीकार करती है कि उसने प्रेम किया है जिसके फलस्वरूप उसका पति उसे घर से निकाल देता है। मृणाल के अन्तर्मन में जो चिड़िया होने की चाहती थी, जो मुक्ति की आकांक्षा थी उनकी कीमत उसे चुकानी पड़ रही थी। बाद में वह दर–दर की ठोंकरें खाने को मजबूर होती है। उसे अपने जीवन के कुछ पल कोयले वाले के साथ बिताना पड़ता है। यद्यपि इस सम्बन्ध में वह जिस प्रकार से प्रमोद के साथ चर्चा करती है तो उससे यह ज्ञात होता है कि उसके हृदय में कोयले वाले के प्रति किसी प्रकार का दुर्भाव नहीं है। बाद में जब प्रमोद बुआ को ले जाना चाहता है तो वह कोयले वाले के प्रति कृतज्ञता स्थापित करते हुए प्रमोद के साथ नहीं जाती हे। जिसके साथ वह पति को छोड़कर आयी है, जिसकी करुणा से वह बची है उसके प्रति वह अकृतज्ञ क्यों हो। यहाँ जैनेन्द्र ने मृणाल का कोयले वाले के प्रति आत्मीयता एवं सहानुभूति का भाव दर्शाया है।

कुल मिलाकर यह स्वीकार करने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि जैनेन्द्र ने 'त्यागपत्र' के द्वारा लीक से हटकर मनोवैज्ञानिक और संवेदनात्मक स्तर के उपन्यास का सृजन किया है। जैनेन्द्र ने अपने पूर्व के उपन्यासकारों का अनुकरण न करके नूतन दिशा में प्रयास किया, यह जैनेन्द्र की विशिष्ट उपन्यास कला का परिचायक है। वास्तव में इतने संक्षिप्त होने के बावजूद 'त्यागपत्र' अपनी संवेदना और प्रवाह के द्वारा हिन्दी साहित्य के उपन्यासों की सुदीर्घ परम्परा में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करता है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. त्यागपत्र–जैनेन्द्र कुमार, पूर्वोदय प्रकाशन।
2. उपन्यास का पुनर्जन्म–परमानन्द श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन।
3. हिन्दी उपन्यास–डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. आधुनिक हिन्दी उपन्यास–नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन।
5. जैनेन्द्र के उपन्यासों का विवेचन–डॉ0 विजय कुलश्रेष्ठ।
6. भारतीय साहित्य के निर्माता : जैनेन्द्र कुमार–गोविन्द मिश्र, साहित्य अकादमी प्रकाशन।
7. हिन्दी उपन्यास की संरचना–गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन।